Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

3140
6588
Price R. 1/-

कैवल्यकल्पद्रुम

श्रीमद्विद्वच्छिरोमणि बाबू द्वारिकानाथ हेडक्लार्क पुलिटिकल एजंसी बुंदेलखण्ड नयागांव

कृत

जिस में

सर्व्वोपकारार्थ सुगम उपाय दर्शक सत्समागम और सद्गुरु साधन रूप सप्त उपदेश और भगवत् महिमा स्तुति प्रकाशक सप्त स्तोत्र व्रजभाषा में रचित हैं ॥

स्थान लखनऊ
मुंशी नवलकिशोर के यंत्रालय में शुद्धता पूर्व्वक छापीगई
अगस्त सन् १८७९ ई०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

JAMMOO

SRINAGAR

भूमिका

उस असीम दया सागर विश्व पालक जगज्जनक ही का बारंबार धन्य वाद है कि जिसने अपूर्व अद्भुत संसार में स्थावर जंगमात्मक सृष्टि से उत्तमोत्तम मनुष्य योनि बनायी और उसी को सब से अधिक ज्ञान शक्ति भी दी है कि जिस के द्वारा जलचर बनचर आकाशचर सर्व पदार्थों को मनुष्य सहजता से जान सकता है और उन से अनेक कार्य साधन करता है इसलिये उस ब्रह्मांड नायक सकल सुख दायक विश्वंभर का सदैव स्मरण करना और उस के गुणानुवाद कथन करना मनुष्य का मुख्य धर्म है और उस के अपराधों से बचने के लिये और अज्ञानता वा ज्ञान से किये हुए पूर्वापराधों के क्षमापन के अर्थ तन्निर्मित मर्यादा रूप सद्धर्म

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मार्ग में चलना अवश्य कार्य है और इन दोनों । अर्थात् मुख्य धर्म और अवश्य कार्यों के बिना । इस शोक सागर संसार तरने को अन्य साधन नहीं है ऐसा विचार कर सर्वोपकारार्थ सुगम उपाय । दर्शक सत्समागम और सद्गुरु लाभ साधन रूप सप्त उपदेश और भगवन्महिमा स्तुति प्रकाशक सप्त स्तोत्र प्रबंध ब्रजभाषा में श्री बाबू द्वारकानाथ हेडक्लार्क पुलीटीकल अजेंसी नयागांव बुंदेल । खंड ने निर्माण किया और प्रबंध रूप कल्पवृक्षां कुर श्री मुकुंद शास्त्री के संमति रूप जल से सिंचित हुआ तो सन्मार्ग प्राप्ति रूप फल दायक कैवल्य-कल्पद्रुम पल्लवित पुष्पित है आशा है कि जो इस का आश्रय लेंगे वे सांसारिक घोर संताप ताप । निवृत्ति और सन्मुक्ति फल को अति सुगमता से प्राप्त होंगे विनय है कि जो इस पुस्तक में धृष्टता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और साहस से अशुद्ध हो गया हो उसे सज्जनलोग कृपा कर शुद्ध कर लेंगे ॥

प्रथम उपदेश

सृष्टि स्थिति प्रलय कर्त्ता ऐहिक पारत्रिक । मंगल दाता सर्वज्ञ सर्व व्यापी मंगल स्वरूप निरवयव एक मात्रिक अद्वितीय परब्रह्म के प्रीति । द्वारा और उन के कार्य साधन द्वारा ईश्वर की उपासना में नियुक्त रहना चाहिये ॥

द्वितीय उपदेश

परब्रह्म जानके अन्य का आराधन न करना चाहिये

तृतीय उपदेश

रोग वा विपत्ति द्वारा अक्षम न हो तो प्रति दिन श्रद्धा प्रीति पूर्वक परब्रह्म में आत्मा का नियोग करना चाहिये ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चतुर्थ उपदेश

सत्कर्म के अनुष्ठान में यत्न शील रहना चाहिये

पंचम उपदेश

पाप कर्मों से दूर रहने के लिये उपाय करना चाहिये

षष्ठ उपदेश

यदि मोह के वश से कभी कोई पापाचरण हो जावे तो उस को अकृत्रिम पश्चाताप पूर्वक त्याग करना चाहिये ॥

सप्तम उपदेश

जिस से धर्म की उन्नति हो ऐसा उपाय करना चाहिये ॥

तुम्ह को यही उपदेश है कि उसी भांति ईश्वर की उपासना करना चाहिये और वक्ष्यमाण स्तोत्र से अहर्निश स्तुति करना चाहिये

Bahsha Sastr
No:69

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ॐ नमः परमात्मने

कैवल्यकल्पद्रुम

प्रथम स्तोत्रं

जो हम लोगों का स्रष्टा पाता और सर्व सुख दाता और हम लोगों के जीवन का जीवन और सकल कल्याण के आकार का आकार और जिस की प्रसन्नता से हम लोगों ने शरीर मन बुद्धि बल ज्ञान और धर्म का लाभ किया है और जो हम लोगों के शरीर मन वा आत्मा को सर्व विघ्नों से सर्वदा रक्षा करता है वह ईश्वर सत्य स्वरूप

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ज्ञान स्वरूप अनंत स्वरूप परब्रह्म है और
वही आनंद स्वरूप और अमृत रूप में ।
प्रकाश पाता है और वही शांत मंगल और
अद्वितीय है हम लोगों को उचित है कि ।
प्रीति पूर्वक एकाग्र चित्त से निज आत्मा
को उस अद्वितीय मंगल स्वरूप में समाहित
करें वह सर्व व्यापी निर्मल निरवयव शिरा
और व्रण रहित शुद्ध अपाप विद्ध है वह सर्व
दर्शी मनो नियंता सर्व श्रेष्ठ और स्वप्रका-
शक है और सर्व काल में प्रजाओं को यथो-
चित द्रव्य विधान करता है और उसीसे प्राण
मन और सकल इंद्रिय और आकाश वायु
ज्योति जल और काल इस पृथ्वी पर उत्पन्न

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होते हैं उस के भय से अग्नि प्रज्वलित होता है सूर्य तपता है मेघ वारि वर्षण करते हैं वायु चलता है और मृत्यु भी संचार करती है ॥

हे सत्यस्वरूप जगत्कारण ज्ञान स्वरूप सर्वाश्रय तुम्ह को नमस्कार है ॥

मुक्ति दाता अद्वितीय नित्य सर्व व्यापी ब्रह्म तुम को नमस्कार ॥

तुम्ह सर्वाश्रय स्थान वैराग्य जगत्पालक और स्वयं ज्योति जगत्की सृष्टि स्थिति प्रलय कर्त्ता श्रेष्ठ निश्चल और द्वैत शून्य सर्व भय का भय और भयानक का भयानक प्राणि मात्रों की गति पावन का पावन महो-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

त्र पद सर्व नियामक श्रेष्ठ का श्रेष्ठ रक्षक का रक्षक है

हम सब तुम्हारा स्मरण करते हैं और तुम्हारा भजन करते हैं

हम सब सत्य स्वरूप आश्रय स्वरूप अवलंब रहित संसारार्णव तरणि अनुपम ईश्वर के शरणापन्न हैं ॥

हे परमात्मन् मोह कृत पाप से मुक्त करो और दुर्मति से विरत रक्खो और त्वन्नियमित धर्म पालन में हम लोगों को यत्न शील करो और श्रद्धा प्रीति पूर्वक प्रति दिन तुम्हारी महिमा और परम मंगल स्वरूप चिंतन करने में उत्साह युक्त करो जिस से क्रम २ से तुम्हारे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साथ नित्य सह वास जनित भूमानंद लाभकर कृतार्थ होवें हे प्रभो असत्से सत्स्वरूप में ले चलो और मृत्यु से अमृत स्वरूप में लेचलो हे स्वप्रकाश हमारे निकट प्रकाशित हो । तुम्हारा जो रुद्र प्रसन्न मुख उसके द्वारा हमारी सर्व काल रक्षा करते हो ॥

द्वितीय स्तोत्र

एक मेवा द्वितीयं ब्रह्म

हे जगदीश्वर तुम ने हम लोगों के लिये चतुर्दिशा में विस्तृत सुशोभित हश्य यह । विश्व रचा है इस में जो अधिकांश मनुष्य तुम्ह को प्राप्त नहीं होते इस का यह कारण है कि हम लोगों से तुम अति दूर हो यद्यपि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हम लोग जो कोई वस्तु को हस्त से स्पर्श । करते हैं उस समय हम लोगों के समीप जाज्वल्य तर प्रकाश मान हो तथापि हम को नहीं दिखलाई देते क्यों कि बाह्य वस्तु में जो इंद्रिय प्रवृत्त होती हैं और वे इंद्रियां हम लोगों को महा मोह में मुग्ध करके आप से विमुख करती हैं अंधकार में केवल तुम्हारी ही । ज्योति प्रकाशित है और अंधकार तुम्ह को नहीं जानता है जैसे तुम अंधकार में हो वैसे ही तेज में भी हो और वैसे ही वायु । आकाश मेघ वृष्टि पुष्प गंध आदि में भी हो हे जगन्नाथ तुम सर्व प्रकार सर्वत्र प्रकाश कर अपने कार्यों में देदीप्य मान हो परन्तु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रमादी अविवेकी मनुष्य तुम्ह को एक वार भी स्मरण नहीं करते हैं सकल विश्व तुम्ह को व्याख्यान करता है तुम्हारे पवित्र नाम उच्चस्वर से बारंबार उच्चारण करता है तो भी हम लोगों का ऐसा अचेतन स्वभाव है कि जो विश्व निस्त एतद्रूप महा शब्द के प्रति हम लोग बधिर हो रहे हैं तुम हमारे चतुर्दिक में हो और हमारे अंतर में हो परंतु हम लोग अपने अंतर से दूर परि भ्रमण करते हैं निज स्वरूप का अनुभव नहीं करते हैं और इसी कारण तुम्हारे अधिष्ठान का अनुभव नहीं। करते हैं हे परमात्मन हे ज्योति और सौंदर्य के अनंतोत्सव हे पुराण अनंत सकल जीवों के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जीवन जो पुरुष अपने अंतर में तुम को। अनु संधान करते हैं उन लोगों का यत्न तुम्हारे दर्शन के लिये कदापि निष्फल नहीं होता है हाय २ कौन पुरुष तुम्ह को अनु संधान। करते हैं जो सर्व पदार्थ आप ने हम लोगोंको दिये हैं वे हम लोगों के मन को ऐसा आकर्षण कर रहे हैं कि प्रदाता के स्मरण नहीं करने देते हैं और विषय विभोग से विरत हो के क्षण मात्र के लिये आप का स्मरण। करें ऐसा अवकाश नहीं पाते हैं तुम्हको अवलंबन करके हम जीवितवान् हैं परंतु तुम्ह को भूल कर अपना जीवन गंवाते हैं हे जगदीश तुम्हारे ज्ञानाभाव में जीवन क्या पदार्थ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है और यह जगत भी कौन पदार्थ है इस । संसार के सब निरर्थक पदार्थ अर्थात् अस्थायीपुष्प स्त्यस्थान क्षरा भंगुर प्रसाद क्षय शील वर्णांक चित्र दीप्तिमान् धातु की राशिवत । हमारे मन को प्रीति बढ़ाते हैं और हमारे चित्त को आकर्षरा करते हैं और हम लोग इन सब वस्तुओं को सुख दायक समझते हैं परंतु यह विचार नहीं करते जो २ वस्तु । हम को सुख देती हैं वे सब तुम्हारे हेतु से मिली हैं जो सौंदर्य आप ने अपनी सृष्टिपर वर्षरा किया है वह सौंदर्य हम लोगों की दृष्टि को उन वस्तुओं ने आछन्न कर रक्खा है तुम एतद्रूप परि स्तुद्ध और महत्पदार्थ हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि जिस से इंद्रिया गोचर हो तुम्ह सत्य ज्ञान अनंत ब्रह्म हो तुम्ह अशब्द अरूप अस्पर्श अव्यय रस्य नित्य गंधवान् हो इसलिये जो लोग पशुवत् आचरण से नीच स्वभाव है वे तुम्ह को नहीं देख पाते अहो हम लोग। कैसे दुर्भाग्य हैं कि सत्य को मिथ्या असत को सत और जो कुछ भी नहीं है उसे सर्वस्व और जो सर्वस्व है उसे कुछ भी नहीं समझते यह तथा और अन्य पदार्थ सकल नीचगामी मन के उपयुक्त है हे परात्मन् हम तुम्ह को सकल वस्तु में प्रकाशवान् देखते हैं जिन्हों ने तुम्ह को नहीं देखा है उन्हों ने कुछ भी नहीं देखा है और जिन्हों ने तुम्हारा आस्वादन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं किया उन्हों ने किसी पदार्थ का आस्वा-
दन नहीं किया उन का जीवन स्वप्नवत् और
उन की स्थिति वृथा है अहो वे मनुष्य कैसे
दुःखी हैं जो तुम्हारे ज्ञान भाव में प्रीति नहीं
करते हैं और जिन्हों की आशा का विश्राम
स्थान नहीं है वे मनुष्य कैसे सुखी हैं जो।
तुम्हारा अनु संधान करते हैं और जो तुम्ह
से मिलने के लिये व्याकुल रहते हैं वे ही।
मनुष्य पूर्ण सुखी हैं जिस के ऊपर तुम्हारा
सुख ज्योति परिपूर्ण रूप से प्रकाशमान है
और जिस के अश्रु मोक्षण तुम्हारे हस्त से
होते हैं और जो तुम्हारी प्रीति पूर्ण कृपा से
तुम्ह को प्राप्त हो कर प्राप्त काम हुए हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हाय मैं कब तक उस दिन की प्रतीक्षा करूं जिस दिन मैं तुम्हारे सन्मुख परिपूर्ण आनं-दित हो कर सकल विमल कामनाओं का भोग करूंगा हमारा मन इसी आशा के आनंद स्रोत में प्लावित हो कर कहता है कि जगदीश आप के समान और कौन हो जिस समय में हमारे शरीर अवसन्न होते हैं जगत लुप्त होता है तब तुम्ह को देखते हैं जो हमारे जीवन का ईश्वर और हमारा उप जीव्य है ॥

तृतीयस्तोत्रं

एकमेव ब्रह्म

हे अनादि परमात्मन् तुम कितने महान् हो मैं क्या कह सकता हूं यह संपूर्ण जगत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निरंतर आप की महिमा को वर्णन करता है अपूर्व सूर्य किरण के भीतर हम केवल तुम्हारी शोभा का दर्शन करते हैं और पुष्प मय सुशोभित कानन की ओर जब दृष्टि करते हैं तो तुम्हारेई हस्त के चिन्ह हमारे मन में देदीप्यमान होते हैं हे प्रभो यही अनंत जगत जो तुम्हारी निरंतर स्तुति करता है सो केवल तुम्हारी ऐश्वर्य्य का वर्णन है और यह तुम्हारे ही महिमा बल में स्थित है हे नाथ यह समुदय सृष्टि अनंत लोक सकल तुम्हारी महिमा का मंचस्वरूप हो कर श्रेणी बद्ध क्रम से उठता है उसी सब दिव्य धाम से तुम्हारा गुण कथन दिन रात्रि ध्वनित होता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हे हे करुणा पूर्ण परमेश्वर हम तुम्हारी ।
अतुल महिमा वर्णन करने में निरंतर युक्त
रहे और तुम्हारी प्रीति रूप सुधा पान में मग्न
हो के संसारिक दुःख शोक का अति क्रम
कर सके ऐसा करें और हमारा मन उसी स्थान
में सर्वदा युक्त रहे कि जहां हम ने ऐहिक पार-
मार्थिक मंगल का दृढ़ विश्वास स्थापन
किया है हे सर्व शक्तिमन् परमेश्वर तुम्हारे
नाम की क्या महिमा है इस विस्तीर्ण जगत
एक सीमा से सीमा पर्यंत तुम्हारी स्तुति रव
में पूरित हो रही है और यह सकल सृष्टि वस्तु
अनंत काल तक तुम्हारे ही अनंत गुण ।
गान करेंगे ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चतुर्थस्तोत्रं

एक मेवा द्वितीयं ब्रह्म

हे सप्रकाश परमेश्वर हमारे निकट प्रका-
शित हो इस संसार के जो गुरु तर भार जो
तुम्ह ने हमारे ऊपर स्थापन किये हैं वह।
केवल तुम्हारे उत्साह जनक आल्हाद कर
मुख दर्शन कर के वहन करते हैं जब हम।
तुम्हारे प्रसन्न बदन को नहीं देखने पाते
तब कितना दुःसह परिताप सहन करते हैं
तब सब वस्तु अंधी भूत तमोवृत्त जानी जाती
है सब वस्तु नीरस ज्ञात होती हैं उस समय
अपुन को भाराक्रांत ज्ञात होता है परंतु हे
जीवन के जीवन जब हम तुम्हारा उत्साह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जनक प्रफुल्ल बदन अलोकन करते हैं तब यह संसार अपूर्व वेष धारण करता है उस । समय यह सूर्य की प्रभा अति उज्वल मधुर तर होती है प्रत्येक वायु की झकोरमधुरवहन करती है नद नदी सकल मधुस्वरण करती है नभोमंडल मधुराकृत दिखाता है उस समय तुम्हारा प्रिय कार्य साधन करने में परिश्रम नहीं होता और तब हम संसार की प्रबल । तरंगों के बीच तुम्ह को निकट जान के अकुतोभय विचरण करते हैं हे नाथ हे शांत ज्ञान समुद्र तुम सर्व व्याप्त हो तुम्ह में सकल वस्तु वासकल जीव प्रविष्ट हो रहे हैं तुम्ह । को जैसे हम सर्वदा अपने ज्ञान नेत्र द्वारा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देखने पावे ऐसा करो तुम्ह हम लोगों के ।
ऊपर निरंतर करुणा वारि वर्षण करते हो
अतएव तुम्हारे ऊपर जिस में कृतज्ञता सर्वदा
जाज्वल्यमान रहे ऐसा करो तुम्ह हम लोगों
से प्रीति करते हो हम लोग जिस में तुम्ह को
पवित्र मन से सर्वदा भक्ति और प्रीति करैं
ऐसा करो हे परमात्मन् जिस में हम सब तुम्ह
को एक क्षणमात्र भी न भूलें ऐसा करो ॥

पंचम स्तोत्रं

एक मेवा द्वितीयं ब्रह्म

हे अपरिमित शक्त्याश्रय परमेश्वर प्रथम
तुम्ह विश्व उत्पन्न करते हो फेर उस का ।
पालन करते हो और क्रम २ से उसकी उन्नति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साधन करते हो इस अनंत विश्व के सृष्टि स्थिति उन्नति कारक जो तुम्ह उन को नमस्कार है तुम्ह निष्काम निष्पाप और परिपूर्ण हो ज्ञानी लोग तुम्ह को स्वीय आत्मा में दर्शन करते हैं परंतु अज्ञानी लोग तुम्ह को अति दूर समझते हैं वे मनुष्य तुम्हारे निर्विकार विशुद्ध रूप में नाना प्रकार विकार की कल्पना करते हैं जन्म रहित अनादि पुरुष जो तुम्ह उन्ह को जन्म विशिष्ट कहते हैं तुम्ह जागरूक सकल के साक्षी हो वे। तुम्हें निद्रित कहते हैं हे परमात्मन् तुम्ह। उज्वल ज्ञान वितरण करके हम लोगों के तमोहत भ्रमा वच्छिन्न देश को सकल भ्रम

6509
CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से उद्धार करो हे देव तुम्ह सूक्ष्म से भी सूक्ष्म
हो के सकल ब्रह्मांड स्थूल पदार्थ के कारण
का आश्रय हो तुम्हारे पूर्ण महत्व का अनु-
भव कौन कर सकता है हे देव तुम्ह अपरि-
मेय हो कोई तुम्ह को परिच्छेद करने को
समर्थ नहीं है तुम्ह सकल के परिच्छेत्ता हो
कोई तुम्ह को जान नहीं सकता तुम्ह सकल
के ज्ञाता हो और तुम्ह सकल के कारण
और ईश्वर हो और कोई तुम्हारा जनक और
अधिपति नहीं है तुम्ह एका की सकल रूप
में प्रकाश करते हो केवल तुम्ह सकल कार्य
वस्तु विधान करते हो तुम्ह को कोई अति
क्रम नहीं कर सकते तुम्ह अर्थ धर्म और सुख

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के आवाह हो और अनंत मनुष्यों के आश्रय स्वरूप हो हे परमात्मन् तुम्हारा स्वरूप कौन जान सकता है जब कि सूर्य की किरणों को नहीं गिन सकता है तो फिर तुम्हारे असीम गुण की स्तुति द्वारा कौन सीमा करेगा हे परमात्मन् तुम्हें कोई वस्तु अप्राप्य नहीं है तुम्ह परिपूर्ण हो तुम्ह सकल मनुष्यों को सुखी करोगे इसलिये इस विश्व को सृजन किया है हे नाथ वाणी तुम्हारी महिमा वर्णन करते करते निरस्त होती है और मन तुम्हारी असीम महिमा का आलोकन करने में श्रांत होता है ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

षष्ठस्तोत्रं

एक मेवा द्वितीयं ब्रह्म

हे अनंत शक्ति अनादि कारण अति ।
निगूढ तत्व तुम्हारी महिमा के स्वरूप को
कौन जान सकता है तुम्ह हमारे मन वाणी
से अगोचर हो और हम सब तुम्हारे पूर्ण
स्वरूप को वचन से कह नहीं सकते और ।
मन से समझ नहीं सकते केवल तुम्हसृष्टि
स्थिति पालन कर्त्ता सर्व के मंगल दाता हो
इतना ही जानते हैं तुम्ही सांसारिक दुर्घ-
टना निवारण करके संतान तुल्य प्रजाओं
को पालन करते हो और सकल मनुष्य के
नियंता और सुहृद हो कर सर्वत्र विराज-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मान हो नाथ तुम्ह में जिन मनुष्यों के । चित्त में निवेशित हुए हो और जो तुम्हारे आधीन हो कर समस्त कर्म तुम्ह में अर्पण किये हैं मुक्ति के निमित्त उन्ह लोगों के । तुम्हारी परमगति परमाश्रय हो हे अनादि परमात्मन् तुम्हारी महिमा इस दुर्लोक । भूलोक में कौन वर्णन कर सकता है पुनः इंद्रियां गोचर तुम्हारे स्वरूप को किस प्रकार निरूपण कर सकता है हे जगदीश तुम्ह को ध्यान करने से मनुष्य पवित्र होते हैं । इस पृथ्वी में से धन धान्य रत्न आभरण कर कौन निःशेष कर सकता है जो आप रचना न करते तो यह विश्व सौंदर्यता और हम ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब कहां स्थित होते हे परमात्मन् तुम्ह । संपूर्ण के और सर्व मंगल के कारण हो और तुम्ह हम सबों को जन्म स्थिति नाश और धन यौबन बुद्धि विद्या शक्ति इन्ह सबों के मूलाधार हो और तुम्ह दया सागर हो हमारे ऊपर आप का स्नेह और प्रेम कितना है यह वर्णन कर नहीं सकते आप ने हमारे लिये सुधा समान दुग्ध माता के स्तनों में प्रकट किया है हम आप के अकृत्रिम स्नेह को । वर्णन नहीं कर सकते कि जिस से बालपन में लालित पालित है हम जानते हैं कि । आप की अपार दया और आप के प्रेम की सीमा कितनी है कि जब माता के गर्भ में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रयन करते हैं तो प्रार्थना करना दूर है परंतु हम शब्द मात्र भी नहीं कर सकते आप ने उस अवस्था में जन्म के अनंतर जो प्रिय है उन्हीं सब को ज्ञान द्वारा और कार्य साधन। के लिये अंग समुदाय प्रदान किया है आप की उदार महिमा प्रार्थना की सापेक्ष नहीं आप ने हम सबों को क्या नहीं दिया और सब वृत्तियों के साथ बुद्धि वृत्ति धर्म वृत्ति को दी है जिस से हम सब सुख स्वच्छंद में जीवन यात्रा निर्वाह पूर्वक इस काल में धर्मोत्पा- दक विशुद्ध सुख साधन करके उत्तर काल में चरितार्थ हो सकता है तुम ने हम सबों को अद्भुत योगिनी प्रचुर शक्ति दी है और बाह्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सकल उसी के साधन के लिये दिये तब भी
हम आप के धर्म मार्ग में नहीं चलते यही।
हम लोगों का दोष है हम लोग आप की
दी हुई बुद्धि और चतुराई से कौन कार्य नहीं
कर सकते हैं अनंत कौशल्य रचित यह।
विचित्र विश्व कार्य देखने से सर्वत्र ही तुम्हारे
ही अनंत ज्ञान महीयसी शक्ति अनिर्वच-
नीय महिमा और अपार प्रेम के चिन्ह प्रत्यक्ष
करके अतुल प्रेमानंद भोग सकते हैं परंतु
हम लोग इस प्रकार अकृतज्ञ हैं कि तुम्हारे
से स्नेह मय परमपिता और प्रीति पूर्ण।
परमबंधु को भूल कर रहते हैं हम लोग
विषय रस में परवश हो कर तुम को मन से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रीति नहीं करते और न तुम्हारे प्रिय कार्य साधन में यत्न करते हैं पुराय के जो मनोहर स्वरूप हैं उसे हम लोग देख के भी नहीं देखते तुम्ह हम लोगों के मन की सकल । गति जानते हो तुम्ह जैसे परम न्यायवान् राजा हो वैसेही परम कल्यारा करुगामय पिता हो अतएव हम लोग अति विश्वस्त चित्त से तुम्हारे शरगापन्न होते हैं और । अति दीनता युक्त तुम्हारे ऊपर भार धर । आप का आश्रय लेते हैं जिस से तुम्ह हम लोगों को पाप ताप से मुक्त कर अपने । अमृत भवन में ले चलो ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सप्तमस्तोत्रं

एक मेवा द्वितीयं ब्रह्म

हे परमात्मन् यह विचित्र जगत तुम्हारी क्या आश्चर्य रचना और निरूपम कौशल्य और अनंत व्यापार है इस भूमंडल से कितने ही बड़े असंख्यात गगन मंडल में विस्तृत हैं ऐसे ब्रह्मांड तुम ने एक काल सृजन किये हैं तुम ने चिंता किया और यह समस्त उसी समय उत्पन्न हुआ हे जगदीश तुम्हारी शक्ति मन के अगोचर हैं तुम्हारे ज्ञान की व्याख्या क्या करूं जब कि एक वृक्ष के पत्र की रचना की कुशलता अच्छी भांति नहीं जान सकते तो तुम्हारे ज्ञान समुद्र को क्यों कर पार उतर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

32/

सकते हैं दिन रात्रि और ऋतुओं का क्या अद्भुत परिवर्तन हो रहा है और पंचभूत के परस्पर क्या चमत्कृत नियम हैं और जीव शरीर भी तुम्हारा शिल्प कार्य है वर्णन करूं और मनुष्यों के मन भी कैसी कुशलता से बनाये हैं कौन कह सकता है परंतु इतना कहता हूं कि तुम्हारी महिमा सकल वस्तु में जाज्वल्यमान है ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

समाप्त

श्री बाबू द्वारकानाथ कालिरियं सर्वेषां दृष्टि विषय गोचरा भूयात् ॥

इति

हस्ताक्षर ईश्वरीसिंह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE